चौथा संसार, इन्दौर 31 DEC 201

विशेष

शिवराज के नेतृत्व में आगे बढ़ता प्रदेश

मध्यप्रदेश देश का हृदय प्रदेश है। इसलिए देश के विकास में उसके सर्वांगीण विकास की महती आवश्यकता है। यद्यपि विकास के अनेक पैमानों के आधार पर मध्यप्रदेश कुछ अन्य राज्यों से पीछे है पर केवल इसी कारण उसे 'बीमारू' प्रदेश कह देना किसी भी प्रकार से उचित नहीं है। मध्यप्रदेश के तमाम बड़े नगरों में लघु भारत के दर्शन होते हैं तो इसीलिए कि देश के विभिन्न प्रदेशों के लोग यहाँ न केवल रह रहे हैं, वरन वे यहाँ बस भी रहे हैं, क्योंकि वे प्रदेश को शांति का टापू मानते हैं। वे अपने-अपने प्रदेशों के लोक-जीवन और लोक-कलाओं को अपनाते हुए भी स्थानीय समाज से पूरी तरह से घुले-मिले हुए है। वे पूरी तरह से एक रस हैं। यह भावनात्मक एकता जहाँ संविधान के अनुरूप है वहीं यह प्रदेश के स्वस्थ होने का ही लक्षण है, बीमारू होने का नहीं। प्रदेश १९५६ की तुलना में आज बहुत आगे है। प्रदेश में विकास के सारे साधन है। प्रदेश का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल ३,०८,२५२ वर्ग किलोमीटर है जिसमें ९४,६८९ वर्ग किलोमीटर वन है जो प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का लगभग ३१ प्रतिशत है। इस प्रकार वन-संपदा से यह प्रदेश अन्य सभी प्रदेशों की अपेक्षा अधिक संपन्न है। यहाँ विविध प्रकार के खनिज प्रचुर मात्रा में हैं। हीरा तो केवल मध्यप्रदेश की ही विशेषता है। हाल में कटनी जिले में संगमरमर का विशाल भंडार मिलने से वहाँ खनन कार्य बड़ी तीव्र गति से चल रहा है। प्रयास तो सोने तथा पेट्रोल की खोज के भी हो रहे है। निजी क्षेत्र के सहयोग से प्रदेश की खनिज संपदा का पता लगाया जा रहा हैं चंबल, बेतवा और नर्मदा तो बड़ी नदियाँ है ही, अन्य छोटी नदियां भी जीवन रेखा ही है। इन नदियों के जल से बिजली भी पैदा की जा रही है और नगरों तथा खेतों की प्यास बुझाने के कार्य भी किए जा रहे है। वर्तमान में प्रदेश का स्वरूप कृषि प्रधान है और पशुपालन कृषि की सहायक गतिविधि हैं इस कारण राज्य की लगभग तीन-चौथाई आबादी गाँवों में ही रह रही है। राज्य की अर्थव्यवस्था में पशुपालन सहित कृषि का योगदान वर्ष २००७-०८ में लगभग २२.५ प्रतिशत बढ़ रहा है। अभी वर्ष २०१० में जनगणना कार्य प्रारंभ हुआ है और जो अगले वर्ष में पूर्ण हो पायेगा। उसके अधिकृत आंकड़े आने में समय लगेगा। फिर भी यह अनुमान लगाया ही जा सकता है कि प्रदेश की अर्थव्यवस्था में पशुपालन सहित कृषि का योगदान लगभग २२.५ प्रतिशत के आस-पास ही रहेगा। प्रदेश का कृषि क्षेत्र केवल अनाज ही पैदान नहीं करता, वह राज्य की कुल आबादी के ७० प्रतिशत से भी कुछ अधिक को जीवन-निर्वाह के साधन भी उपलब्ध करा रहा है। स्वाभाविक है कि राज्य सरकार कृषि को लाभकारी उद्योग बनाने के लिए कृत-संकल्पित है। कृषि की उन्नति किसान की उन्नति है और किसान की उन्नति प्रदेश की उन्नति का पर्याय है। खेती के लिए बड़ी और मझौली सिंचाई योजनाओं के अतिरिक्त स्थानीय स्तर की बलराम तालाब योजना से खेतों की प्यास बुझाई जा रही है। जबलपुर के और हाल ही में ग्वालियर में भी स्थापित कृषि विश्वविद्यालयों ने अपने शोध-कार्यों के द्वारा खेती की उपज बढ़ाने के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है। इसी प्रकार जबलपुर में कुछ माह पूर्व स्थापित पशुपालन एवं चिकित्सा विश्वविद्यालय न केवल दुधारू पशुओं, बल्कि अन्य पशुओं और कुक्कुट पालन के विकास को नई दिशा देकर प्रोत्साहित करेगा। औद्योगिक विकास अपरिहार्य हो गया है। प्रदेश में नए उद्योग स्थापित हो इसके लिए राज्य सरकार सतत प्रयत्नशील है। कृषि आधारित उद्योगों की प्रचुर संभावनाएँ है। विद्युत उत्पादन और अन्य उद्योगों की स्थापना के लिए आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था की जा रही है। इस सबके परिणाम आने वाले कुछ वर्षों में दिखना ही चाहिए। अशिक्षा एक अभिशाप है। अब तो सर्व शिक्षा कानून के कारण बच्चों को विशेष लक्ष्य बनाकर ६ से १४ वर्ष तक के बालक-बालिकाओं को अभियान चलाकर शालाओं में प्रवेश लेने वालों को अनेक प्रकार की सुविधाएँ प्रदान की जा रही है। सामाजिक क्षेत्र में भी अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग के अतिरिक्त अन्य कमजोर वर्ग के लिए अनेक योजनाएँ चलाई जा रही है। नारी वर्ग के कल्याण से संबंधित विभिन्न योजनाएँ बहुत लोकप्रिय हुई है। लालफीताशाही पर अंकुश लगाने के लिए हाल ही में राज्य सरकार ने लोक सेवा गारंटी के रूप में एक क्रांतिकारी कदम उठाया है। अंत्योदय दर्शन को समर्पित इस नए कानून की एक खास बात यह है कि अपने मंत्रिमंडलीय सहयोगियों सहित मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान जनता के कार्यों में होने वाले विलंब के लिए अपने को भी जवाबदार मानेंगे। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि शिवराज के नेतृत्व में देश का हृदय प्रदेश निरंतर आगे बढ़ रहा है।

-पं. छोटू शास्त्री